हज़रत अबु बक्र सिद्दीख रज़ियल्लाहु तआला अन्हु- विशालता व प्रतिष्ठा

अल्लाह तआ़ला ने इसलाम के पैगम्बरों को नबूवत व रिसालत कि शान के साथ संसार में उजागर फरमाया तथा इन्हें सम्पूर्ण कायनात में सर्वश्रेष्ट व उच्च बनाया। इन उच्च लोगों के बाद उत्कृष्टता व विशिष्ठता के बारे में सहाबा किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम – हैं।

क्यों के इन्हें अल्लाह तआ़ला ने अंतिम पैगम्बर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम कि पावन संगत व सोहबत से संबोधित व अभिस्वीकृति फरमाया। इन्हें ईमान कि स्थिति सरवर कौनैन सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के दीदार का सुन्हरा अवसर प्रदान किया।

सैयदी शैक़ुल इसलाम हज़रत संप्रवर्तक जामिया निज़ामिया रहमतुल्लाहि अलैह ने मुसन्नद फिरदौस दैलमी के उल्लेख से वर्णित निवर्चन फरमाई हैः

भाषांतरः अवश्य अल्लाह तआ़ला ने सम्पूर्ण बन्दों पर संकलन नज़र ड़ाली तथा मेरे (सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम) सहाबा से बढ कर पवित्र व शुद्ध दिल किसी को ना पाया तो इन को निश्चय किया तथा मेरा (सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम) सहाबी बना दिया।

अब वह जिसे अच्चा समझें वह अल्लाह तआ़ला के पास भी अच्छा है तथा वह बुरा समझें वह अल्लाह तआ़ला के पास भी बुरा है।

(मुसन्नद फिरदौस दैलमी)

अहले सुन्नत वा जमात का एकजुट विश्वास है के सम्पूर्ण सहाबा किराम में हज़रत सिद्दीख अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु सर्वश्रेष्ट हैं। आप कि उत्तमता व प्रतिष्ठा असंख्या है।

क़ुरान मजीद कि आयत मुबारक आप कि शान में प्रकट हुई। अल्लाह तआ़ला फरमाता हैः-

भाषांतरः तथा जो नबी सत्य बात लेकर आए तथा जिस ने इन कि पुष्टि की, वही लोग परहेज़गार व डर रखने वाले हैं।

(सुरह अल ज़ुमरः 39:33)

इ़माम फक़्रुद्दीन राज़ी रहमतुल्लाहि अलैह फरमाते हैः-

भाषांतरः इस से तात्पर्य एक ही व्यक्ति है, तो जो सत्य बात ले कर आए वह सैयदना मुहम्मद रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम हैं तथा जिस ने आप कि पुष्टि की वह हज़रत सिद्दीख अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हैं। तथा यह रिवायत हज़रत अ़ली मुरतज़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तथा मुफस्सिरीन किराम रहीमुल्लाह की एक बडी श्रेणी से आख्यान है।

(अल तफसीरुल कबीर, रूहुल ईमान, सुरह अल ज़ुमरः 33)

इसी प्रकार अने अवसर पर सरकार दो आ़लम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम से अटूट व अनाश्य संयोजन कि आधार पर हज़रात सहाबा किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम अपने बीच हज़रत सिद्दीख अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को हर दृष्टि से मुख्य व श्रेष्ठ तथा उच्च व बेहतर जानते और मानते थे।

पावन जन्म

हज़रत सिद्दीख अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का पावन जन्म फील कि घटना के लगभग 2 वर्ष 4 मास बाद हुआ। (अल अकमाल, फी असमा अर रुजाल)

जब आप रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का जन्म हुआ इसी समय से आप कि प्रतिष्ठा व स्तर उजागर होने लगी अल्लाह कि बारगाह से आप कि दर्जा कि बुलंदी के जलवे होने लगे। अल्लाह तआ़ला ने आप के जन्म के साथ प्रेम व मुहब्बतों के सिलसिले को आप से जोड दिया तथा आप के चाहने वालों को जन्नत कि जमानत व निश्चिंता दान फरमाई।

हदीस शरीफ में वर्णन है, हाफिज़ इब्न अ़साकिर ने हज़रत अबदुल्लाह बिन उ़मर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत अनुवाद की, हज़रत रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने आदेश फरमायाः

भाषांतरः जब हज़रत अबु बक्र सिद्दीख रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का जन्म हुआ तो अल्लाह ने जन्नत से सम्मुख हो कर फरमायाः मुझे अपनी इज्जत व जलाल का वचन! ऐ जन्नत! मैं तुझ में इन्हीं भाग्यशालियों को प्रवेश करुँगा जो इस नवजात से मुहब्बत व प्रेम करने वाले होंगे।

(मुक़तसर तारीक दमिश्क, जिल्द 13, पः 69)

धन्य नाम तथा उपाधि

हज़रत सिद्दीख अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का नाम नाम हज़रत अबदुल्लाह बिन उसमान रज़ियल्लाहु तआला अन्हु है। आप के पिता का नाम हज़रत अबु खुहाफा उसमान बिन आ़मिर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु है तथा आप के माता का नाम मुबारक हज़रत उम्मुल क़ैर सलमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा है।

आप के उपाधि व पद में सिद्दीख मशहूर व प्रसिद्ध है। क्यों के यह मुबारक उपाधि आप को किसी निर्माण ने नहीं दिया। बल्कि अल्लाह तआ़ला ने प्रदान किया। जैसा के सुनन दैलमी में ह़ज़रत उम्मे ह़ानी रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से वर्णित है के सरकार दो आ़लम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने आदेश फरमायाः

भाषांतरः ऐ अबु बक्र! अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारा नाम सिद्दीख रखा है।

(कंज़ुल उ़म्माल, हुर्फ अल फा, फज़्ल अबी बक्र अल सिद्दीख रज़ियल्लाहु तआला अन्हु, ह़दीस संख्याः 32615)

अभी आप ने पैगम्बरों के इ़माम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम कि सत्य ज़बान से ह़ज़रत सिद्दीख अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कि सत्यता का विवरण सुना, अब आएं ऑलिया के इ़माम कि ज़बान फैज़ से सुनिए। ह़ज़रत मौलाय कानयात ह़ज़रत सैयदना अ़ली मुरतज़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने आदेश फरमायाः

भाषांतरः अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रत अबु बक्र रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का नाम "सिद्दीख" आकाश में प्रकट फरमाया है।

आप को सिद्दीख के मुबारक पद से इस लिए भी याद किया जाता है क्यों के आप ने बिना किसी विलम्ब सब से प्रथम मेअ़राज के चमतकार (आश्चर्य व अलौकिक कर्म) के अभिपुष्टि व समर्थन किया। जैसा के मुसतदरक अ़ला सहिहैन तथा तारीक़ुल क़ुलैफा में वर्णित हैः-

भाषांतरः ह़ज़रत आयशा सिद्दीखा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से आख्यान है के मेअ़राज के अगले दिन मक्के के मुशरिकीन ह़ज़रत अबु बक्र के पास आए तथा कहाः अपने साहिब कि अब भी अभिपुष्टि करोगे? इन्हों ने दावा किया है "रातों रात बैतुल मखदस कि सैर कर आए हैं" अबु बक्र सिद्दीख ने

कहा "अवश्य आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम) ने सत्या उपर्युक्त किया है, मैं तो सवेरे-शाम इस से भी महत्व कर्म कि अभिपुष्टि करता हुँ"। इस घटना से आप रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का पद व उपाधि सिद्दीख प्रसिद्ध हो गया।

इसी प्रकार आप का एक उपाधि "अ़तीख" भी प्रसिद्ध है। जिस का अर्थ "स्वतंत्र" के हैं। हज़रत अबुल हसनात सैयद अबदुल्लाह शाह साहिब नक्षबंदी मुजद्दिदी खादरी मुहद्दिस देक्कन अलैह रहमा ने जामे तिरमिज़ी के हवाले से ज़ुजाजातुल मसाबीह में आप का पद अ़तीख होने का कारण सत्यापन से संबंधित एक रिवायत अनुवाद कियाः

भाषांतरः उ़म्मुल मोमिनीन सैयदना आयशा सिद्दीखा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से वर्णित है के हज़रत अबु बक्र सिद्दीख रज़ियल्लाहु तआला अन्हु, हज़रत रसूल अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम कि पावन सेवा में उपस्थित हुए तो सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने आदेश फरमायाः तुम अल्लाह कि ओर से नरक से आजाद हो। इसी दिन से आप को अ़तीख कहा जाने लगा।

(ज़ुजाजातुल मसाबीह, किताबुल मुनाखिब, जिल्द 5, पः 248, जामे तिरमिज़ी हदीस संख्याः 3612)

समुदाय के प्रथम

हज़रत सिद्दीख अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के असंख्या विशिष्ठता है। इसलाम स्वीकार करने से पूर्व आप ने अत्यन्त पवित्र जीवन बिताने की, खुरैश के मुखिया आप की महिमा का अनुमोदन किया करते थे तथा अपने महत्व प्रशासन में आप से अनमोल उपदेश लिया करते थे। हज़रत इ़माम नववी रहमतुल्लाहि अलैह फरमाते हैः-

भाषांतरः हज़रत अबु बक्र सिद्दीख रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का समावेश खुरैश के मुखिया व नायक से था, आप इन्हें उपदेश देने वालों में थे, इन में आप कि व्यक्तित्व अत्यन्त प्रिय थी तथा आप इन के प्रशासन को श्रेष्टतर रूप पर जान्ने वाले थे।

हज़रत अबु बक्र सिद्दीख रज़ियल्लाहु तआला अन्हु- सर्वप्रथम

नबूवत कि घोषणा से पूर्व भी आप सरवर कौनैन सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के चाहने वालों तथा सहचर में शामिल है तथा जब बेअ़सत कि घोषणा हुई तो रसूल अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम कि उच्च जात गुण पर सर्व प्रथम आप रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ही ने ईमान लाया।

जबके साहिबज़ादों तथा उस में सब से प्रथम ईमान लाने वाले हज़रत मौलाय कायना हज़रत सैयदना अ़ली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हैं तथा महिलाओं में हज़रत उम्मुल मोमिनीन (मोमिनों कि माँ) सैयदतना खदीजातुल कुबरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा इसलाम से समाविष्ट हुईं।

हज़रत अबदुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से पूछा गया के सर्व प्रथम ईमान लाने वाले कौन हैं? आप ने इरशाद फरमायाः कया तुम ने हज़रत हस्सान बिन साबित रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के लोकोक्ति नहीं सुनेः-

भाषांतरः-

जब तुम सत्य के कथन वाले व्यक्ति के दुःख दर्द को याद करने लगो तो अपने भलाई अबु बक्र रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के कारनामों (पराक्रम व अद्भुत कर्म) को याद कर लेना।

सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम तथा पैग़म्बरों के बाद सम्पूर्ण निर्माण में सर्व श्रेष्ठतर, सर्व अधिक धर्मनिष्ट तथा सर्व अधिक न्याय पसंद हैं, ज़िम्मेदारी में सर्व अधिक ज़िम्मेदारियों के समापन करने वाले हैं।

नबी अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के याद ग़ार, हमेशां आप कि संगत में रहने वाले तथा निर्माण में समीक्षा व गुणगान के योग्य हैं, तथा सब से प्रथम रसूलों कि अभिपुष्टि करने वाले हैं।

(अल इसयआ़ब, जिल्द 1, पः 294, हाशियतुल रुखानी अ़ला अल मवाहिब, जिल्द 1, पः 445)

इस बुलंद पर्वत पर ग़ार कि घटना में दो आदरणीय व्यक्ति में से दूसरे आप ही थे। जब के पहाड़ी पर चढने के बाद विरोधी ग़ार के अतराफ मण्डलाने लगे।

जो हज़रत रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के प्रिय हैं, सब को मालूम है के आप सम्पूर्ण निर्माण में (पैगम्बरों के बाद) सर्व श्रेष्टतर तथा सरकार दो आ़लम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने किसी को आप के बराबर नहीं घोषित किया है।

(अल इस्तयआ़ब, जिल्द – पः 295)

सरकार दो आ़लम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि सल्लम कि बारगाह में इसे वर्णन करने तथा आप के फरमाने से इस कि महत्व वर्णन करने के निर्धन नहीं।

सिद्दीख अकबर की प्रशंसा सुन्ना- मुसतफा कि सुन्नत

हाफिज़ इ़ब्न अ़साकिर वर्णन करे हैं, सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने हज़रत हस्सान रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से पूछाः

(लिप्यंतरणः-) *हल खलत फी अबी बक्र शीया?* भाषांतरः कया अबु बक्र के बारे में भी कुछ कहा है? निवेदन किया हाँ! आप ने निम्नलिखित अति उत्तम कथन सुनाएः-

(लिप्यंतरणः-) *फसरल नबी बज़लक फकाला हसनत या हस्सान।*

कथन सुन कर सरकार सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने प्रसन्नता का प्रदर्शन किया तथा फरमाया ऐ हस्सान तुम ने खूब कहा।

(अल अस्तयआ़ब, पः 295)

कंज़ुल उ़म्माल में है सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने फरमायाः- भाषांतरः सिद्दीख कि बड़ाई कहो मैं (सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम) को सुन्ना चाहता हुँ।

हज़रत हस्सान बिन साबित गुणगान सुना चुके तो नबी करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम प्रसन्न हो गए, आनंदित (मुस्कुराहट) से आप सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के दांत मुबारक प्रकट हो गए।

आप सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने फरमायाः ऐ हस्सान! तुम ने सत्य कहा है निश्चय सिद्दीख ऐसी ही हैं जैसे तुम ने उपर्युक्त किया।
(कंज़ुल उ़म्माल, हदीस संख्याः 35673)

इस रिवायत से साबित हुआ के *नअ़त* के प्रकार मंखबत (गुणगान) सिद्दीख अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को सुन्ना भी सुन्नत मुसतफा सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम है तथा मंखबत सुनाना सुन्नत सहाबी है अधिक हज़रत सैयदना सिद्दीख अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कि बढाई व स्तुति

पर प्रसन्नता का प्रदर्शन करना नबी करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम कि मुबारक सुन्नत है।

इसलाम के लिए हज़रत सिद्दीख का प्रवरण- आकाश में प्रवरण

हज़रत अबु बक्र सिद्दीख रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के इसलाम लाने कि बडी अनोखी घटना है। अबी सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने नबूवत कि घोषणा नहीं फरमाई थी। इस समय आप ने एक सपना देखा तो किसी राहिब ने इस कि उपसंहार (तअ़बीर) यह कही के अंतिम नबी सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के पदार्पण का दिन अत्यन्त खरीब आ चुका हैं।

तथा तुम्हारे भाग्य में यह सुख लिख दिया गया के तुम इन पर ईमान लाने वाले हो। जैसा के सुबूलुल हुदा वर्रिशाद मे हैः-

भाषांतरः नबूवत कि घोषणा से पूर्व आप ने एक अनोखा सपना देखा, वह यह के आप ने देखा के चौधवी का चांद जो मक्के कि ओर उतरने लगा, इस का नूर मक्के शरीफ के हर स्थान तथा सम्पूर्ण घरों मेंफैल गया। फिर यह चांद सिमट कर चमकता हुआ आप कि गोद में आ गया, तो हज़रत सिद्दीख अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने यह सपना अहले-किताब के एक विद्वान को सुनाया तो इस ने उपसंहार दिया के नबी मोहतशम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम जिन का पदार्पण कि परीक्षा है।

यह प्रकट होने का ज़माना खरीब आ चुका है तथा लोगों में सर्व अधिक आप इन से संपर्क व संबंध कि कृपा प्राप्त करने वाले हों। अर्थात जब हज़रत रसूल अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने नबूवत कि घोषणा की तो आपने कुछ विलम्ब ना किया (तथा इसलाम से आलिंगन व समाविष्ट हो गए)।

(सबूलुल हुदा वर्रिशाद, जिल्द 2, पः 303)

सिद्दीख अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कि धर्मनिष्ठा

जब हज़रत अबु बक्र सिद्दीख रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ईमान ले आए तो मक्का के काफिर अत्याचार ढाने लगे। आप को कठिनाई व समस्या में ढाला जाने लगा। इसलाम के प्रचार के सिलसिले में रुकावटें खडी की जाने लगीं। तथा आप को इबादतें से रोका गया।

हज़रत सिद्दीख अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अपने भवन में इबादत किया करते तथा क़ुरान कि तिलावत किया करते। काफिर यह भी सहन ना कर सके। आप को इतना सताया तथा चोट पहुंचाया, दुःख व यातना कि सीमा पार हो गई।

इसी कारण से आप ने प्रिय मक्का छोडने का विचार कर लिया तथा हबशा कि ओर प्रवासन के उद्देश्य से जाने लगे। हज़रत उम्मुल मोमिनीन सैयदतना आयशा सिद्दीखा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा जब रास्ते में इब्न दग़ना जो एक नामवर वर्ग का मुखिया था। आप से मिला तथा पूछा के कहाँ का इरादा है? आप ने विस्तार आख्यान किया तो वह कहने लगाः

भाषांतरः अवश्य आप तो दुर्बल को कमा कर देते हैं भला व्यवहार करते हैं। दुर्बल का बोझ उठाते हैं, अतिथि का आवभगत करते हैं तथा सत्य के मार्ग में आन वाली कठिनाई के अवसर पर मदद करते हैं।

यह कहे कर इस ने आप को वापिस चलने के लिए कहा के आप जैसे लोगों को मक्के में रहना चाहिए। चलिए मैं आप को अमान (शान्ति) देता हुँ तथा मक्के पहुंच कर इस ने घोषणा कर दिया के आज से मैं अबु बक्र कि सुरक्षा का ज़िम्मेदार हुँ।

किन्तु बाद मे सत्य के मार्ग में ऐसी रुकावटें आने लगीं के इ़ब्न दग़ना आप कि सुरक्षा का वचन तोड दिया।

(सहीह बुखारी हदीस संख्याः 2297)

इ़ब्न दग़ना ने जिन गुण से आप को याद किया इन सम्पूर्ण गुण व स्वरूप का संबंध सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के पवित्र आदत व प्रवृति से था। सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने वही के प्रकट के प्रारंभ के बाद जब हज़रत खदीजा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा को तफसील बतलाई तो आप ने सरकार दो आ़लम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम को इन्हीं गुण व लक्षण का प्रकाशन कर के धीरज व विनोद दिया था।

सरकार कि सेवा में स्नेह व प्रेम से इसलाम से आलिंगन होने के कारण यह सम्पूर्ण गुण व लक्षण हज़रत सिद्दीख अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कि व्यक्ति में रच बस गईं।

कर्म के मैदान के

हज़रत सिद्दीख अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का हमेशां यही व्यवहार रहा के कभी आप ने कोई पुण्य कर्म व नेकी करने में अज्ञानता ना की। बल्कि हमेशा इस में फरमाया करते। यही कारण है के आप अबु बक्र के उपनाम से नामवर हो गए हैं।

वास्तव में *बक्र* का अर्थ प्रारंभ व उत्पत्ति के हैं तथा अबु बक्र का अर्थ प्रथम करने वाले। प्रथमतः रखने वाले के होते हैं। धन्य नाम आप नेकी के कार्य में प्रस्ताव फरमाते।

भले कार्य में प्रथमतः प्राप्त करते। भलाई के करने में – ले जाते तथा हर भले कार्य को बखूबी अंजाम दिया करते। अर्थात सहीह मुसलिम में हदीस पाक हैः-

भाषांतरः हज़रत अबु हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से वर्णित है, इन्हों ने कहाः हज़रत रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने आदेश फरमायाः तुम में वह कौन व्यक्ति है जिस ने आज रोज़ा रखा? हज़रत अबु बक्र सिद्दीख रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने निवेदन कियाः मैं! सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने आदेश फरमायाः तुम में वह कौन व्यक्ति है जिस ने आज जनाज़े (मृत्यु) को कंधा दिया? हज़रत अबु बक्र सिद्दीख रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने निवेदन किया- मैं!

सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने आदेश फरमायाः तुम में वह कौन व्यक्ति है जिस ने आज गरीबों व दरिद्र को खाना खिलाया?

हज़रत अबु बक्र सिद्दीख रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने निवेदन कियाः मैं! सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने आदेश फरमायाः तुम में आज किस ने रोगी को देखभाल व देखने के लिए गया? हज़रत अबु बक्र सिद्दीख रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने निवेदन कियाः मैं! तो हज़रत रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने आदेश फरमायाः यह (गुणवत्ता व विशेषता) जिस किसी में जमा व संग्रह हो जाएं वह जन्नत में प्रवेश होगा।

(सहीह मुसलिम, हदीस संख्याः 6333)

आप की निष्ठा व दृढ़ता के द्वारा कई सदस्य इसलाम में आलिंगन हुए। अल्लाह के मार्ग में आप अपना धन निर्विवाद रूप से खर्च किया करते। एक अवसर पर 40 हजार अशरफियां अल्लाह कि राह में इस प्रकार खर्च

फरमाएं के दिन में 10 हजार, रात में 10 हजार, गुप्त रूप से 10 हजार तथा लोगों को निर्देश दिलाने कि उद्देश्य सार्वजनिक रूप से 10 हजार।

आप का यह कर्म अल्लाह कि बारगाह में इस प्रकार स्वीकृत हुआ के अल्लाह तआ़ला ने आप कि विशालता में आयत प्रकट की। अल्लाह तआ़ला का आदेश हैः-

भाषांतरः वह लोग जो अपना धन को रात-दिन छिपे तथा खुल रूप से खर्च करते हैं तो इन के लिए इन के रब के पास इन का प्रतिफल है। इन पर ना कोई भय है ना वह वे शोकाकुल होंगे।

(सरुह अल बक़रहः 02:274)

उ़मैह बिन क़ल्फ ने जब ह़ज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु पर अत्याचार कि सीमा पार कर दी तो ह़ज़रत सिद्दीख अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने आधा सैर सोने के बदले आप को खरीद कर स्वतंत्र कर दिया।

ह़ज़रत सिद्दीख अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के पिता ने "जो अभी इसलाम से आलिंगन नहीं हुए थे" कहा के इस प्रकार अधिक मात्रा में कमज़ोर सदस्य को स्वतंत्र कर वाने के बजाए किसी शक्तिशाली व्यक्ति को स्वतंत्र करवाऊ। ताकि कठिनाई के समय वह हमारा उपकारक व सहायक बन सके।

ह़ज़रत सिद्दीख अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने उत्तर दिया के मैं ने यह कर्म किसी सांसारिक लाभ व बदले के लिए नहीं किया बल्कि अल्लाह तआ़ला कि सन्तुष्टि व प्रसन्नता के हासिल कर के लिए किया है।

आप के इस अनुराग (क़ुलूस) उद्देश्य तथा कर्म कि पवित्रता का प्रकटन अल्लाह तआ़ला ने क़ुरान करीम में इस प्रकार फरमायाः

भाषांतरः तथा निस्संदेह इसे (नरक) से दूर रखा जाएगा जो सब से बडा परहेज़गार व्यक्ति है, जो अपना धन खर्च करता है ताकि शुद्ध व पवित्र हो। तथा हाल यह है के किसी का उस पर उपकार नहीं कि जिस के बदला दिया जाए। बल्कि इससे अभीष्ट केवल उसके अपने उच्च रब के मुख (प्रसन्नता) की चाह है जो सर्व बुलंद है तथा वह शीघ्र ही राज़ी हो जाएगा।

(सुरह अल लैलः 92:17-21)

क़यामत के दिन सिद्दीख कि विशालता

जन्नत में हर पुण्य व नेकी का एक दरवाज़ा होगा क़यामत के दिन इस नेकी करने वाले को संबंधित द्वार से बुलाया जाएगा तथा हज़रत अबु बक्र सिद्दीख रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कि शान व प्रतिभा यह होगी के आप को हर द्वार से बुलाया जाएगा जैसा के मुसनद इ़माम अहमद में हदीस पाक हैः-

भाषांतरः हज़रत अबु हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से वर्णित है, इन्हों ने फरमायाः हज़रत रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने अनुदेश फरमायाः हर भला व नेक कर्म करने वाले के लिए जन्नत व स्वर्ग का एक द्वारा है, वह इसी कर्म के द्वार से बुलाए जाएंगे। तथा रोज़ेदारों के लिए एक दरवाज़ा है। इसका नाम *रियान* है वह (रोज़ेदार) इसी दरवाज़े से बुलाए जाएंगे। तो हज़रत अबु बक्र सिद्दीख रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने निवेदन कियाः या रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम! कया कोई इन सम्पूर्ण दरवाज़ों से बुलाया जाएगा, सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने आदेश फरमायाः हाँ! और मैं विश्वास रखता हुँ के ऐ अबु बक्र तुम इन्हीं लोगों में से हो।

(मुसनद अल इ़माम अहमद, मुसनद अबी हुरैरह, हदीस संख्याः 10054)

यही कारण था के सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने आदेश फरमायाः

भाषांतरः जिस व्यक्ति को यह बात प्रसन्न करती हो के नरक से आज़ाद किसी व्यक्ति को देखे तो वह अबु बक्र को देख लें।

(अल मुसतदरक अ़ला सहिहैन, हदीस संख्याः 4378, तारीक़, दमिश्क, जिल्द 13, पः 780)

सिद्दीख अकबर के लिए सम्पूर्ण ईमान जाति का पुण्य

आप के ईमान कि प्रथमतः का इस हदीस से भी किया जा सकता है जिसे क़तीब बग़दादी ने अपनी सनद के साथ हज़रत मौलाय कायनात हज़रत सैयदना अ़ली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से वर्णित किया, आप फरमाता हैं सरकार दो आ़लम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबु बक्र सिद्दी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को फरमायाः

भाषांतरः ऐ अबु बक्र! आदम अलैहि सलाम से ले कर मेरे बेअ़सत तक जो कोई भी मुझ पर ईमान लाया हर एक का पुण्य अल्लाह तआ़ला मुझे (सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम) पहुंचजाएंगा तथा ऐ अबु बक्र! मेरी (सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम) बेअ़सत से क़यामत तक सम्पूर्ण ईमान दारों का पुण्य तुम्हें मिलेगा।

(तारीक़ बग़दादी, जिल्द 4, पः 252)

इ़माम बैहखी कि शुअ़बुल ईमान में हदीस पाक हैः-

भाषांतरः हज़रत हुज़ैल बिन शरजील रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया के सैयदना ऊमर बिन खत्ताब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अनुदेश फरमायाः यदि हज़रत अबु बक्र सिद्दीख रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के ईमान को धरती वाले के ईमान से तोला जाए तो अवश्य हज़रत अबु बक्र सिद्दीख ही इन सम्पूर्ण पर प्रभावनित आ जाएंगे।

(शुअबुल अल इमान, हदीस संख्याः 35)

सिद्दीख अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का त्याग व बिलदान

हज़रत सिद्दीख अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के प्रयत्न व प्रयास कि सारांश व्यक्ति जिस प्रकार मैदान कर्म में पेश रही इसी प्रकार अन्य स्थिति व अवस्था में आप का कोई उदाहरण व आदर्श नहीं आप ने अल्लाह तआला और इस के हबीब सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम अपने विश्वास के स्वभाव का जिस प्रकार प्रकट कियाः इसे समापन के लिए तथा िस पर कर्म करना तो दूर कि बात इसे अपने कल्पना व विचार में भी नहीं लाया जा सकता।

हज़रत फारूख आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं के मैं हज़रत हज़रत सिद्दीख अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से किसी मामले में तुलना नहीं कर सकता। अर्थात सिहा सित्ता में हदीस पाक है, हज़रत ऊमर फारूख रज़ियल्लाहु तआला अन्हु वर्णित करते हैं- हज़रत रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने हमें उपकार व खैरात करने का आदेश फरमाया।

संयोग से ऐसा हुआ के इस समय मेरे पास काफी धन था। मैं सोंचने लगा के आज मैं हज़रत अबु बक्र सिद्दीख रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से कर जाऊँगा, इस उद्देश्य से मैं ने अपना आधा धन सरकार के दरबार में पेश किया तथा हज़रत अबु बक्र सिद्दीख रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अपने पास जो कुछ ता वह सब सरकार के दरबार में पेश कर दिया।

अर्थात सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने आदेश फरमाया ऐ उ़मर! घर वालों के लिए कया छोड आए हो? तो मैं ने निवेदन कियाः आधा धन छोड आया हुँ! फिर सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने ह़ज़रत अबु बक्र सिद्दीख रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से आदेश फरमायाः आप अपने घर वालों के लिए कया छोड आए हों? तो ह़ज़रत सिद्दीख अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने निवेदन कियाः मैं इन के लिए अल्लाह तआ़ला और इस के रसूल सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम को छोड आया हुँ। ह़ज़रत फारूख आ़ज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं मैं कहने लगा- खुदा कि क़स्म इन से किसी चीज़ में आगे नहीं बढ सकता।

(जामे तिरमिज़ी, ह़दीस संख्याः 4038, सुनन अबु दाउद, ह़दीस संख्याः 1680, अल मुसतदरक अ़ला सहिहैन, ह़दीस संख्याः 1457)

ह़ज़रत सिद्दीख अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने ना केवल अपने विश्वास के स्वभाव व भावना का प्रकटन किया। बल्कि उम्मत को यह सन्देश दिया तथा इस बात कि घोषणा कर दी के घर में धन व सम्पत्ति समाप्त हो जाए तो कोई बात नहीं, हम रसूल के दरबार के दरबारी हैं, हमारी देख भाल व निगरानी ह़बीब खुदा कि नज़र प्रदान व करम नवाज़ी पर है। दुनयवी धन व सम्पत्ति हो या वस्तुएं सब कुछ इसी दाता कि सम्पत्ति से मिलता है।

परवाने को चिराग़ है, बुलबल को फूल बस, सिद्दीख के लिए है खुदा का रसूल बस।

अतः आप ने सरकार सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम से निवेदन किया के कारा धन आप कि सेवा में उपस्थित है तथा घर में अल्लाह तआ़ला और इस के ह़बीब सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम को छोड कर आया हुँ। जब ह़ज़रत फारूख आ़ज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने आप कि यह

अखीदत (उपासना व श्रद्धा) देखी तो कह दिया के मैं किसी मामले या कार्य में आप से आगे नहीं बढ सकता।

फर्शे ज़मीन पर सहाबा किराम आप कि दानशीलता व त्याग का वर्णन करते रहे तथा अ़र्श बरीं पर अल्लाह तअ़ाला ने मलायका के बीच आप कि त्याग व बलिदान कि भावना पर अपनी प्रसन्नता कि घोषणा फरमाई।

तथापि तफसीर खुरतूबी में हज़रत अबदुल्लाह बिन उ़मर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत वर्णन हैः-

भाषांतरः हज़रत सैयदना सिद्दीख अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अपना सारा धन व सम्पत्ति अल्लाह कि राह में खर्च करने के बाद एक पेवंद (टांके वाला) वाला अ़बा पहन कर बारगाह में उपस्थित हुए जिस में घुण्डियों के स्थान पर कांटे लगे हुए थे।

इसी पल जिब्रील अमीन अल्लाह का सन्देश ले कर उपलब्ध हुए तथा निवेदन कियाः या रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि वसल्लम! अल्लाह तअ़ाला सिद्दीख अकबर को सलाम फरमाता है, आप उन से बात करें के वह इस गर्व कि स्थिति में अपने रब से सन्तुष्ट हैं के नहीं?

सरकार पाक सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि वसल्लम ने जब हज़रत सिद्दीख से फरमाया तो आप रो पडे तथा कहने लगे मैं अपने रब से नाराज़ कैसे हो सकता हुँ? अवश्य मैं अपने रब से सन्तुष्ट हुँ। इस को 3 बार दोहराते रहे।

हज़रत जिब्रील ने निवेदन कियाः सरकार! अवश्य अल्लाह तअ़ाला फरमाता है, मैं उन से राज़ी हो चुका हुँ जिस प्रकार वह मुझ से सन्तुष्ट हैं। तथा अल्लाह के आदेश से सम्पूर्ण अर्श भी वही वस्त्र पहने हुए हैं जो आप के सिद्दीख ने पहना।

(तफसीर खुरतुबी, सुरह अल हदीद, आयत नम्बरः 10)

अल्लाह तआ़ला और हबीब पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम से अखीदत के मामले में हज़रत सिद्दीख अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कि यह स्थिति थी के दूसरे सहाबा इस उत्तमता व प्रतिष्ठा को ना पा सके।

सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम से आप कि मजबूत नाता तथा सम्पूर्ण विश्वास व अखीदत का अंदाजा इस हदीस पाक से भी लगाया जा सकता है जो सहीह बुखारी शरीफ में मरवी है।

घटना युं हुई के सरकार दो आ़लम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम समझौते के एक मामले में कबीले उमरो बिन औ़फ के पास तशरीफ ले गए। इस दौरान नमाज़ का समय आ गया।

मोज़िन रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम हज़रत सिद्दीख अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के पास आए तथा इ़ममत करने के लिए विनती की, अर्थात इ़खामत कही गई तथा आप इ़माम करने लगे। इसी देर में रसूल पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम तशरीफ फरमा हुए आप कि नमाज़ कि यह स्थिति थी के किसी ओर ध्यान नहीं होते, सहाबा किराम आप को सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम कि पदार्पण का एहसास दिलाने लगे।

अंत में आप ध्यान उधर किए तो देखा के इ़मामुल अम्बया सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम तशरीफ फरमा हो चुके हैं। तुरंत कारण से पीछे हटे और सफ में शामिल हो गए।

सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने आप को इ़मामत का आदेश भी फरमाया। परन्तु आप पीछे हट गए। फिर इ़मामुल अम्बया सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने इ़मामत फरमाई। नमाज़ संपादन

होने के बाद सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने आदेश फरमायाः

भाषांतरः ऐ अबु बक्र! मेरे आदेश देने के बावजूद तुम्हें अपने स्थान स्थापित रहने से किस चीज़ ने रोका तो हज़रत अबु बक्र सिद्दीख रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने निवेदन कियाः अबु खुहाफा के बेटे कि कया मजाल के हज़रत हसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के आगे नमाज़ संपादन कर सके।

(सहीह बुखारी, हदीस संख्याः 684)

सिद्दीख अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने नमाज़ में ना केवल ग़ैर खुदा का ध्यान लाया बल्कि ऐन नमाज़ कि स्थिति में हबीब पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम का दीदार किया। शिष्टाचार का प्रदर्शन किया, पीछे हट गए तथा पूछने पर निवेदन किया के बात कुछ और नहीं थी। मेरे शिष्ठाचार व सभ्याचार अनुमति नहीं देते के इ़मामुल अम्बया सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के आगे नमाज़ पढ सकुँ।

ना ही रहमतुल लिलआ़लमीन सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने आप के इस कर्म पर रोक फरमाया तथा ना आप कि इस विश्वास व अखीदत कि भावना को अप्रसन्न किया तथापि हज़रत सिद्दीख अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अ़मली रूप से उ़म्मत (समुदाय) को यह सन्देश दिया के इ़बादतों में अ़खीदत तथा – कि उच्चता शिष्टाचार को शामिल रखना ही कर्म कि स्वीकृत कि दलील है।

पैगम्बरों के बाद सर्वश्रेष्ट निर्माण

विश्वास, उपासना व आचरण, हज़रत सिद्दीख अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कि व्यक्तित्व के जिस क्षेत्र पर नज़र डाली जाए, और जिस पहलू को

देखा जाए आप परम व प्रधान कि बुलंदियों पर प्रमाणित है तथा यह बात भी निश्चित है के सब सहाबा किराम आप के वैभव व प्रताप व कमालात के परिचित थै तथा आप कि विशालता का प्रकटन भी फरमाया करते थे।

अर्थात इस पर मौलाय कायनात हज़रत अ़ली मुरतुज़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का लोकोक्ति साक्ष्य हैः-

भाषांतरः हज़रत अबु जहिफा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से वर्णित है, इन्हों ने फरमायाः मैं ने हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को फरमाते हुए सुनाः हज़रत नबी करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के बाद इस उ़म्मत सब से श्रेष्टतर हज़रत अबु बक्र सिद्दीख रज़ियल्लाहु तआला अन्हु है।

(मुसनद अल इमाम अहमद, मुसनद अ़ला बिन अबु तालिब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हदीस संख्याः 845, मुसन्नफ बिन अबु शैबा, जिल्द 7, पः 475)

अर्थात जब सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के पावन देहान्त कि स्थिति शुरु हुईं तो हुज़ूर पाक अलैहि सलातुसलाम ने हज़रत सिद्दीख अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को मसजिद नबवी में इ़मामत का आदेश फरमाया। इस समय आप ने 17 नमाज़ों कि इ़मामत फरमाई।

खिलाफत सिद्दीख पर पूर्ण सहाबा किराम का एकमत्य

पावन देहान्त नबवी के बाद जब खिलाफत का विषय पेश हुआ तो मुहाजिरीन (काम्दिशीक) व इन्सार सर्व सहाबा किराम ने सामूहिक रूप से हज़रत सिद्दीख अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को मुसलमानों का खलीफा निर्वाचित (निश्चित) किया और आप के मुबारक हाथ पर बैअ़त की।

इस विस्तार को अ़ल्लामा यूसुफ बिन इसमाइ़ल नबहानी रहमतुल्लाहि अलैह हज़रत ग़ौसे-आ़ज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के हवाले से युं व्याख्या किया के हज़रत उ़मर फारूख रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमायाः

भाषांतरः तुम में वह कौन है, जो यह चाहता है के हज़रत सिद्दीख अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को इस पद से हटादे, जिस पर इन्हें हज़रत रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने स्थापित किया तो सम्पूर्ण सहाबा किराम ने कहाः अल्लाह क्षमा करे! हम में कोई इस बात को गवारा नहीं कर सकता।

हज़रत ग़ौसे-आ़ज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु वर्णन करते हैः- मुहाजिरीन के साथ अन्सारीन सहाबा किराम ने भी आप कि खिलाफत पर निश्चय किया तथा सभों ने बैअ़त कि, जिन में हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तथा हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हैं।

और कर्तव्यनिष्ठ योग्य रिवायत में यह बात भी आई है के हज़रत सिद्दीक अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बैअ़त लेने के बाद 3 दिन तक लगातार लोगों से मुलाकात करने लगे तथा इन से कहते के लोगो! कया तुम ने बैअ़त कर ली है? यदि इस में कोई रुकावट हो तो वह बैअ़त से --- हो जाए।

तो सहाबा किराम में सब से प्रथम हज़रत मौलाय कायनात सैयदना अ़ली मुरतज़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कहने लगे जैसा के रिवायत हैः-

भाषांतरः तो लोगों में सब से प्रथम हज़रत सैयदना अ़ली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कहने लगेः ना हम बैअ़त तोडेंगे और ना कभी इस कि मांग करेंगे। कौन आप को नज़र अंदाज़ कर सकता है जबके हज़रत रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने आप को मान्य व प्रधान किया है।

जमल के युद्ध के बाद हज़रत अबदुल्लाह बिन अलकवा ने हज़रत अ़ली मुरतज़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से पूछा के खिलाफत से संबंधित कया आप को सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने कुछ फरमाया था, तो आप ने अनुदेश फरमायाः-

भाषांतरः हम ने खिलाफत के मामले में चिन्ता व फिक्र किया, यह बात उजागर हुई के नमाज़ इसलाम का महत्व सुतून है (जिस कि इ़मामत के वह अधिकार ठहराए) अतः अल्लाह तआ़ला तथा इस के प्यारे रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने धर्म के मामले में इन से अपनी सन्तुष्टी का प्रदर्शन फरमाया। अर्थात हम ने सांसारिक आचरण के लिए इन्हें स्वीकार कर लिया तथा खिलाफत का मामला के आश्रय कर दिया।

(अल असालीब अल बदीअ़य मअ़ शवाहिद हक़, पः 356)

पवित्र देहान्त

सैयदना सिद्दीख अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु 2 वर्ष 7 माह खिलाफत पर उजागर फरमा रहे।

(तारीक़ उल खुलेफा अबु बक्र सिद्दीख)

आप का देहान्त मुबारक मदीने शहर में मग़रिब व ई़शां के बीच 22 जमादील उखरा 13 हिज्री में हुआ। उस समय आप कि उम्र 68 वर्ष थी।

आप ने वसीयत फरमाई थी के आप के जनाज़े को दरबार रिसालत पर लाना तथा सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम से आज्ञा कि इच्छा करना।

आदेश मिले तो आप के रौज़े (समाधि) मुबारक में दफन करना, वरना जन्नतुल बखीअ़ शरीफ में दफन कर देना अर्थात आप की वसीयत के

अनुसार आप को कफनाकर दरबार नबवी में ले जाया गया। जैसा के तफसीर राज़ी में हैः-

भाषांतरः अब रही हज़रत अबु बक्र सिद्दीख रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कि व्यक्तित्व तो यह आप कि करामत (चमतकार) है के जब आप का जनाज़ा नबी अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के पावन रौज़े के सामने रख कर निवेदन किया गया-

या रसूल अल्लाह! यह अबु बक्र सिद्दीख उपस्थित है। एक के बाद एक खूद बखूद रौज़ा खुला और सभी ने भीतर से यह अवाज़ सुनी केः हबीब को हबीब के पास ले आऊ।

(तफसीर कबीर, तफसीर नीशापूरी तफसीर राज़ी, सुरह अल कहफ, आयत नम्बरः 09)

यह सुन कर प्रेक्षक ने आप को हुजरे मुबारक के भीतर हज़रत रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के पहलू में दफन किया। जैसे आप नबी अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के यार रहे। इसी प्रकार आप को यारमज़ार होने का कृपा प्राप्त हुई।

अल्लाह तआ़ला हमें सत्य विश्वास को मजबूती से थामने तथा भले व नेक कर्मों को अपनाने की मार्गदर्शन दान फरमाए तथा सदाखत सिद्दीख अकबर की बरकत से हमें भी सदाखत व अमानत का – बनाएं।

आमान.।

अनवारे-क़िताबत -06